सायं सन्ध्यावन्दनम्

Only the variations to praataH sandhyavandanam procedure are given below.

1.saayaM sandhyaavandanam.h should be performed facing west.
2.In praashanam (item 6) Gayatri aavaahanam 20(b) and Gayatri upasthanam 20(c) there are few variations as described below
3.Recite "saayaM sandhyaa" where ever the "prataH sandhya" word is occuring in sankalpam and saatvika dyaagam etc.

6. praashanam प्राशनम्

अग्निश्चेत्यनुवाकस्य सूर्य ऋषिः touch the head

गायत्री च्छन्दः touch the nose tip

अग्निर्देवता touch the chest

अपां प्राशने विनियोगः (place "tiirtham" in the hollow of right palm and recite as follows)

ओं। अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः।

पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यदह्ना पापमकार्षम्।

मनसा वाचा हस्ताभ्याम्।

पद्भ्यामुदरेण शिश्ना। अहस्तदवलुम्पतु। यत्किंच दुरितं मयि।

इदमहं माममृतयोनौ। सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा॥

(after uttering the above mantra japa ingest(swallow and not sip) the water from the palm)

20 (b) Gayatri aavaahanam after reciting sarasvathiim aavaahayaami inplace of

प्रातर्ध्यायामि गायत्रीं रविमण्डल मध्यगाम्।

ऋग्वेदमुच्चारयन्तीं रक्तवर्णां कुमारिकाम्।

अक्षमालाकरां ब्रह्मदैवत्यां हंसवाहनाम्॥

सायं सन्ध्यावन्दनम्

recite

सायं सरस्वतीं श्यामां रविमण्डलमध्यगाम्।

सामवेदं व्याहरन्तीं चक्रायुधधरां शुभाम्॥

ध्यायामि विष्णुदैवत्यां वृद्धां गरुडवाहनाम्॥

20 (c) In Gayatri Upasthaanam

After Uttame shikhare devii.. In place of "oM | mitrasya charshhaNiidhR^itaH.." Recite this

| | | | |

ओं। इमं मेवरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके।

-- --- -- --

| | | | | |

तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।

-- --- -- -- --

| |

अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशग्म्स मा न आयुः प्रमोषीः।

--- --- -- -- ---

| | |

यच्चिद्धि ते विशो यथा प्रदेव वरुण व्रतम्। मिनीमसि द्यवि द्यवि॥

--- -- --- -- -- --- ---

| | | | | |

यत्किंचेदं वरुण दैव्ये जनेऽभिद्रोहं मनुष्याश्चरामसि।

-- -- --- ---

| | |

अचित्ती यत्तव धर्मा युयोपिम मा नस्तस्मादेनसो देवरीरिषः॥

--- --- -- --

| |

कितवासो यद्रिरिपुर्न दीवि यद्वाघा सत्यमुत यन्न विद्म।

--- --- --- --- -- -- --- --

| | | |

सर्वाता विष्य शिथिरेव देवाथा ते स्याम वरुण प्रियासः॥

-- -- --- --

इति यजुर् सायं सन्ध्यावन्दनम्